चैन्नई (भारत)
अगस्त ८, २००८

सन्देश संख्या १५२

एक ईसाई क्रियावान (देहावसान, शिवरात्रि, २००८) के शरीर में परमानंद का विस्फोट

शिव 'शव' है, क्योंकि उसमे 'मैं' मृत है, मर चुका है अर्थात्, वह शून्य हैं । 'मैं' की शून्यता ही शिव है यानी कि शिवत्व । किन्तु यह शिवत्व हठयोग के 'शवासन' में सुप्त रहता है । इसलिए 'शवासन' के रूप में इसके अनुकरण में 'मैं' का अस्तित्व वर्तमान रहता है अर्थात् इसमें विभेदकारी चित्तवृत्ति 'मै' की मृत्यु घटित नहीं होती । किन्तु किसी–किसी क्रियावान के शरीर में यह अनिच्छित रूप से बिना किसी पूर्व सूचना के सहसा अनायास ही घटित हो सकती है । अन्तर–अस्तित्व में इस मिथ्या विभाजन अर्थात् विभेदकारी चित्तवृत्ति की मृत्यु ही पवित्र दिव्यता, भगवत्ता यानी कि चैतन्य का जागरण है। दुर्भाग्यवश, यह चैतन्य 'मैं' के गहन अनुबन्धन से उत्पन्न मानसिक बोझ, बन्धन, कट्टरता एवं उसकी आत्म–केन्द्रित गतिविधियों के कारण सुप्तावस्था में पड़ा रहता है ।

चैतन्य जागरण की घटना एक ऐसे शरीर में घटित हुई है जिसका पोषण भारतीय ईसाई के रूप में हुआ है और वह एक गृहस्थ शरीर है । वस्तुतः इसका उदय उसी शरीर में होता है, जिस शरीर में होता है । यह किसी 'कारण' पर अथवा 'इसलिए' पर आधारित नहीं है । यह कारण रहित, स्वायत्त और स्वतंत्र है । यह किसी इंगित अथवा निमंत्रण का आकांक्षी नहीं है और न ही इस पर हिन्दुओं, ब्राह्मणों, संन्यासियों, हिमालय–निवासियों आश्रमवासियों का एकाधिकार है । यह युवक और चेन्नई के उसके कुछ क्रियावान–मित्र क्रियायोग के माध्यम से समझदारी की ऊर्जा के प्रसार हेतु यथाशक्ति कार्य कर रहे थे । शायद इसीलिए ईसाई लोग भी ईसा–मसीही प्रक्रिया की गहरी समझदारी हेतु क्रिया–योग की तरफ आ रहे हैं । ईसा मसीही प्रक्रिया वस्तुतः पूरब की योग क्रिया है, न कि जीवन के संदर्भ में मन की पश्चिमी अवधारणायें।

उस ईसाई क्रियावान द्वारा रचित कविता नीचे प्रस्तुत है –

महादेव
परम शान्ति महादेव है और शब्द–समूह संसार ।
शब्द 'मैं' मूल है संसार का
इसी से उत्पन्न होते हैं,
दूसरे सभी शब्द एवं लोक सभी ।
सभी शब्द उत्पन्न होते हैं परम शक्ति से,
और फिर सब उसी में डूब जाते हैं ।
जैसे समस्त लोक उत्पन्न होते हैं महादेव से,
और फिर लय हो जाते हैं उसी शव–शिव में;
परम शन्ति शब्दों से कभी दूषित नहीं होती ।
जैसे, महादेव नहीं होते दूषित संसार से ।
शब्द आते–जाते हैं, किन्तु परम शांति अविचल है ।
लोक उत्पन्न होते हैं, मिट जाते हैं, किन्तु महादेव स्थिर हैं ।
जब 'मन; मिट जाता है, 'मैं' गिर जाता है,
तब उत्तेजना फैलाने वाले
चित्तवृत्ति के उपादान भी धवस्त हो जाते हैं ।
और तब भ्रांति को सतत् बनाये रखने वाला
हर तरह का षड्यंत्र भी समाप्त हो जाता है ।
भ्रांति 'मैं' का विनाश में पतन ही,
परमशांति का उन्नयन 'है,
जो सहज निर्विकार, निर्दोष और मुक्ताकाश है
समस्त लोकों के इस महादेव को अनन्त प्रणाम है !

शिवेन्दु इस कविता को वेबसाईट पर संदेश के रूप में प्रस्तुत कर प्रसन्न हैं ।

।। वेबसाइट की जय हो ।।